श्री गणेश उत्सव के उपलक्ष्य में

१३-२३ सितम्बर, २०१८

गणेश उत्सव, भगवान गणेश को समर्पित एक पर्व है जो कि भारतीय संस्कृति में सर्वाधिक प्रिय देवों में से एक हैं और वे विघ्नहर्ता तथा नवीन शुभारम्भों के देवता के रूप में जाने जाते हैं। यह उत्सव पूरे भारत में मनाया जाता है, विशेषकर महाराष्ट्र, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश और तेलंगाना राज्यों में। पौराणिक कथानुसार, यह उत्सव दस दिनों की उस अवधि का स्मरण कराता है जब महर्षि व्यास महाकाव्य, महाभारत का वर्णन बोलकर कर रहे थे और भगवान गणेश अपने गजदन्त से उसे लिख रहे थे।

इस वर्ष यह महोत्सव, गणेश चतुर्थी [१३ सितम्बर] को आरम्भ होगा। इस दिन, अनेक परिवार भगवान गणेश का स्वागत करने के लिए अपने घरों में उनकी मूर्ति लाकर उसकी स्थापना करते हैं। साथ ही वे उन गुणों का भी स्वागत करते हैं जिनके प्रतीक भगवान गणेश हैं, जैसे बुद्धि, समझ और विवेक। उत्सव के प्रत्येक दिन वे भगवान गणेश की पूजा-अर्चना करते हैं और आगामी वर्ष के लिए उनके आशीर्वादों का आह्वान करते हैं। उत्सव के अन्तिम दिन, यानी अनन्त चतुर्दशी [२३ सितम्बर] को हर्षोल्लास के साथ नाचते-गाते हुए शोभायात्रा निकाली जाती है और भगवान गणेश की प्रतिमा को किसी समुद्र, नदी या तालाब पर ले जाया जाता है। तत्पश्चात् उनकी प्रतिमा को जल में विसर्जित कर दिया जाता है और इस जयघोष के साथ उन्हें विदा किया जाता है, "गणपती बाप्पा मोरया, पुढच्या वर्षी लवकर या!" मराठी भाषा के इस वाक्य का अर्थ है, "हे गणपति, आपकी जयजयकार! अगले वर्ष आप जल्दी आइए!" यह रस्म नवीनीकरण को दर्शाती है — भगवान गणेश विदा तो होंगे, पर वे लौटकर सदैव आएँगे।

© २०१८ एस.वाय.डी.ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।